# दुकानदार और अकाउंटन्ट

*ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित*

आल्प्स की वादियों में, कहीं एक ऊँचे पर्वत की तलहटी की घुमावदार घाटी में एक छोटा-सा गाँव बसा हुआ था। और उस गाँव के बीचोबीच एक दुकान थी। वह दुकान एक जनरल स्टोर की तरह थी, जहाँ खाने से लेकर साबुन तक और मुलायम ऊनी दस्तानों से लेकर टोपी तक सब कुछ मिलता था। इस गाँव में रहने वाले लोगों को यह जगह बहुत पसन्द थी। वे रोज़ सुबह यहाँ ताज़ी ब्रेड लेने और दिनभर का खाना बनाने का समान लेने आया करते। वे दोपहर में भी यहाँ आ जाते और जो भी सामान घर में ख़त्म हो रहा होता जैसे मोमबत्तियाँ, धागा या सर्दी की दवाई, ले जाते। रात को भी वे झाँक ही लेते और भीड़ में जो भी खड़ा मिल जाए उनका हाल-चाल पूछ लेते। यह एक दुकान थी, मिलने की एक जगह थी, सभी के लिए एक धुरी थी, घर की तरह थी।

यह दुकान एक दम्पती यानी एक पति-पत्नी चलाते थे जिन्हें यह उनकी शादी के तुरन्त बाद अपने परिवार की ओर से विरासत में मिली थी। उनके नाम थे, हैन्स और फ़्रीडा और गाँववालों को ये दोनों बहुत प्रिय थे। उनकी विनम्र आँखें और सरल व्यवहार, दुकान का उतना ही अभिन्न हिस्सा थे जितना कि लकड़ी के तिरछे छज्जे और ज़मीन से लेकर छत तक की ऊँची अल्मारियाँ।

हैन्स और फ़्रीडा को भी अपना कार्य बहुत प्रिय था। यह उनका शौक़ था, अपने समाज में योगदान देने का यह उनका तरीक़ा था। हालाँकि, उनकी आमदनी बहुत ज़्यादा नहीं थी कि वे अत्यधिक खर्च कर सकें परन्तु वे कभी शिकायत करने की कोई वजह भी नहीं देखते। हर सप्ताह के अन्त में वे अपनी आमदनी और खर्चा एक चमड़े की जिल्दबन्द किताब में लिखते जिसके पन्ने भी मोटे, चमड़े जैसे थे और कोने मुड़े हुए थे। उन्हें जो कुछ भी चाहिए था, वह सब उनके पास था। वे अपने बेटे की परवरिश कर पा रहे थे और एक सुखद जीवन व्यतीत कर रहे थे।

इसी तरह दस, बीस, पच्चीस साल बीत गए। गाँव में जीवन ख़ुशी-ख़ुशी चलता रहा और काफ़ी हद तक दुकान वैसी ही रही जैसी वह थी, एक शाश्वत उपस्थिति के स्मृतिचिह्न की तरह। हर सुबह वह खुलती और हर शाम बन्द हो जाती। लोगों की भीड़ अन्दर आती और बाहर चली जाती। बहीखाते की

उस किताब का चमड़ा समय के साथ पुराना और नरम हो गया और उसका रंग चितकबरा लाल-भूरे रंग का हो गया।

अब, इतने समय में इस दम्पती का बेटा एन्द्रियास भी बड़ा हो गया था। इस गाँव से बाहर की दुनिया के बारे में जानने के लिए उत्सुक, वह आगे की पढ़ाई करने के लिए गाँव से कुछ दूरी पर स्थित दूसरे शहर चला गया। वहाँ उसका परिचय नई विचारधाराओं, नए दृष्टिकोण और कार्य करने की अधिक विकसित और कुशल प्रणालियों से हुआ। समय-समय पर वह यह सोचता कि जो कुछ भी वह सीख रहा है, उसमें से कुछ ज्ञान वह अपने माता-पिता के व्यापार में कैसे लागू कर सकता है और वे लोग अपने ग्राहकों के लिए दुकान को और आकर्षक कैसे बना सकते हैं।

एक शाम, जब एन्द्रियास अपने माता-पिता से मिलने घर वापस आया, वह मेज के पास बैठ गया जहाँ उसके पिता दिनभर की आमदनी गिन रहे थे। उसने उस परिचित-से वातावरण को ग़ौर से देखा : छत के लिए लगे लकड़ी के लट्ठों से आती सीलन की दुर्गन्ध, अल्मारियों के ऊपर बिखरा हुआ सामान।

“पिताजी?” थोड़ी देर बाद उसने कहा।

“हाँ बेटा?” हैन्स ने कहा। वे सामने पड़ी नोट की गड्डी और सिक्कों के ढेर की ओर देख रहे थे, उनका अर्धचन्द्राकार चश्मा उनकी नाक पर टिका हुआ था।

“क्या आपने कभी . . . यहाँ पर कुछ बदलाव लाने के बारे में सोचा है?”

“बदलाव?” हैन्स उसकी बात को ग़ौर से नहीं सुन रहे थे।

“हाँ। मेरा मतलब है, आप मुझे ग़लत न समझें, आपने इस जगह जो किया है, वह बहुत अच्छा है। सभी को हमारी दुकान पसन्द है। बस मुझे ऐसा लगता है कि हम चीज़ों को थोड़ा अधिक आकर्षक बना सकते हैं। उन्हें थोड़ा और व्यवस्थित तरीक़े से रख सकते हैं।”

हैन्स ने अपना चश्मा उतारा और बेटे की ओर देखा।

“तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है?”

“अच्छा, ये देखिए, आप किस तरह से पैसे गिन रहे हैं। आप अभी भी वही किताब इस्तेमाल कर रहे हैं जो आप तब करते थे जब मैं छोटा बच्चा था।” एन्द्रियास ने बही अपनी ओर खींची। वह कागज़ों से भरी हुई थी और उसकी जिल्द उखड़ रही थी। हर पन्ने पर न जाने पिछले कितने वर्षों की आमदनी का हिसाब छोटे-छोटे अस्पष्ट अक्षरों में लिखा हुआ था।

“देखिए?” बेटे ने कहा। “इसे पढ़ना ही मुश्किल है, इस्तेमाल करना तो दूर की बात है। क्या आप सचमुच यह बहीखाता देखकर बता सकते हैं कि दुकान कैसी चल रही है? यदि व्यापार जिस तरह से बढ़ना चाहिए, वैसा बढ़ता रहे तो आपको कैसे पता चलेगा कि हम भविष्य में भी खुद को बनाए रख सकते हैं या नहीं।

उसके पिता ने अपनी भौहें चढ़ाईं। इतने समय से उनका आय और व्यय का हिसाब-किताब रखने का यह सरल तरीक़ा कारग़र रहा था। पर, उन्होंने सोचा कि हो सकता है उनके बेटे की बात सही हो। पच्चीस साल हो गए थे। शायद अब उन्हें नई चीज़ों की जानकारी होना चाहिए।

“तो बेटा, तुम्हें क्या लगता है, हमें क्या करना चाहिए?”

“मैं एक अच्छे अकाउंटन्ट को जानता हूँ जो पास ही के गाँव में रहता है। मैं उससे हमारे आय-व्यय का हिसाब-किताब देखने के लिए कहूँगा।”

उसके कुछ दिनों बाद, दुकान के दरवाज़े पर दस्तक हुई और छोटे कद का एक मोटा-सा आदमी अन्दर आया; वह एक भारी-सा काला सूट पहने हुए था जिसकी कॉलर कड़क थी व कलफ़ की हुई थी और वह चपटे शीर्ष वाली टोपी लगाए हुए था। “नमस्कार,” उसने कहा, “मैं हेर्र इम्होफ़ हूँ और अकाउंटन्ट हूँ!” प्रभाव डालने वाले अन्दाज़ में उसने अपनी टोपी उतारी।

हैन्स, जो पास की अल्मारियों में सामान रख रहा था, उसने इस हेर्र इम्होफ का अभिवादन किया। जब उसने इस आदमी को दुकान दिखाई तो उस आदमी ने दुकान की विभिन्न चीज़ों को ध्यान से देखा जो बेचने के लिए रखी थीं, कुछ चीज़ों को वह अपनी जगह से उठाता और, “हूँ”, “आह” या “ओहो” ऐसी आवाज़ें निकालता जाता। हैन्स ठीक से समझ नहीं पा रहा था कि इनका क्या अर्थ निकाला जाए, परन्तु वह हमेशा की तरह विनम्र बना रहा और हेर्र इम्होफ को उस मेज के पास ले गया जिस पर बहीखाता और बिल रखे थे और उसे एक कप चाय दी।

हेर्र इम्होफ ने बड़े रूखेपन से अपना सिर हिलाया। बल्कि उसने अपनी टोपी उतारी, एक पैन और साफ़-सुन्दर जिल्द चढ़ी नोटबुक निकाली और काम करना शुरू कर दिया।

कुछ घण्टों बाद वह उठा और अपनी टोपी वापस लगा ली। “देखिए, काम बहुत ही ज़्यादा है, बहुत-सी गिनती और निरीक्षण फिर से करना पड़ेगा, परन्तु मैं कर रहा हूँ। मैं कल फिर आऊँगा।”

तो फिर, वह अगले दिन आया, फिर उसके अगले दिन, और फिर उसके अगले दिन। कुछ समय तक सब इसी तरह चलता रहा, हेर्र इम्होफ सुबह आ रहा था, कुड़कुड़ाते हुए या नाक-भौं सिकोड़कर दुकान का निरीक्षण कर रहा था और फिर दोपहर में बहीखाते ताक रहा था।

इसी तरह काम चलते कुछ सप्ताह बीत गए, तभी एक दिन फ़्रीडा का ध्यान गया कि उसका पति कुछ अजीब ही ढंग से चुप-चुप-सा हो गया है। दिन बहुत सुन्दर था, हल्का गर्म, धूप खिली हुई और खिड़कियों से रोशनी अन्दर आ रही थी। दुकान लोगों से भरी हुई थी, कई लोग बड़े जोश के साथ बात कर रहे थे कि पहाड़ों की ओर सफ़र करने या पिकनिक मनाने के लिए उन्हें क्या-क्या ख़रीदना चाहिए।

“क्या हुआ?” फ़्रीडा ने पूछा। “आप इतने चुप क्यों हैं?”

हैन्स ने नीचे अपने हाथों की ओर देखा, उसके माथे पर चिन्ता की लकीरें थीं। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

“ये क्या है? आप जानते हैं न कि आप मुझे बता सकते हैं।”

“अकाउंटन्ट। हेर्र इम्होफ के कारण।” उसके माथे की लकीरें और गहरी हो गईं।

“उसके बारे में क्या?”

“कल रात जब वह जा रहा था तो उसने . . . उसने मुझे बताया कि . . .” हैन्स की आवाज़ धीमी हो गई।

“हाँ? उसने क्या बताया?”

हैन्स ने एक लम्बी साँस छोड़ी और ढीले पड़ते हुए कहा “उसने कहा कि हम दिवालिया होने वाले हैं।”

“क्या?” फ़्रीडा ने कहा। “ऐसा कैसे हो सकता है?”

“अच्छा, बात यह है कि हम अभी दिवालिया नहीं हो रहे हैं — पर हेर्र इम्होफ ने कहा है कि *हो सकता है* कि हम आगे कभी दिवालिया हो जाएँ! उसने कहा है कि हमें अपनी दुकान को और बड़ा करना होगा, हमें अपने ग्राहक भी बढ़ाने होंगे और अलग-अलग किस्म का सामान भी रखना होगा और यह कहा है कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह सब गलत है!”

उसने अपना सिर पकड़ लिया, वह पूरी तरह टूट चुका था और बहुत दुखी था।

फ़्रीडा ने दुकान की ओर देखा। सँकरे-से गलियारे में लोगों की भीड़ लगी हुई थी। लोग हँस रहे थे, बात कर रहे थे, सामान चुन रहे थे। रजिस्टर के पास ग्राहकों की एक पंक्ति बनना शुरू हो गई थी। वह अपने पति की ओर मुड़ी।

सुनिए, मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ।"

"हाँ, पूछो?" हैन्स ने दबी-सी, धीमी-सी आवाज़ में कहा। वह अभी भी अपना सिर पकड़े बैठा था।

"इतने सालों से हम इस दुकान के मालिक हैं, हैं न?"

"हाँ।"

"और इस दौरान हमारे पास हमेशा बहुत सारे ग्राहक आते रहे हैं न?"

"हाँ।"

"और आपने हमेशा से बिल और खर्चे का सावधानी से हिसाब रखा है, है न?"

"हाँ।"

"और हमारे पास हमेशा पर्याप्त पैसा रहा है, है न?"

"हाँ।"

"और हम खुश रहे हैं?"

"हाँ, बहुत खुश।"

"तो वह क्या है जो बदल गया है?"

हैन्स ने अपनी पत्नी की ओर देखा। उसके चेहरे पर जो दुख के, निराशा के भाव थे, वे छँटने लगे।

और फिर वह बोला :

"अकाउंटन्ट!"

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।